M	T	W	T	F	S	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

Friday
दिनांक :- 10-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

वर्ग :- 12वीं

कांस्य काल : हड़प्पा एंव सिंधु घाटी की सभ्यता बीसवीं शती के द्वितीय तक पाश्चात्य विद्वानों की यह धारणा थी कि सिकंदर के आक्रमण (ई॰ पू॰ 326) के पूर्व भारत में कोई सभ्यता ही नही थीं। परंतु इस शती के तृतीय दशक में यह इस भ्रामक धारणा का निराकरण हुआ जब कि दो प्रसिद्ध पुरातत्वशास्त्रियों - दयाराम साहनी तथा राखालदास बनर्जी ने हड़प्पा (पंजाब के मान्टगोमरी जिले में स्थित) तथा मोहन

12 SUNDAY

जोदड़ो (सिंधु के लरकाना जिले में स्थित) के प्राचीन स्थलों से पुरावस्तुएँ प्राप्त करके यह सिद्ध कर दिया कि परस्पर 640 किलोमीटर की दूरी पर बसे हुए ये दोनों ही नगर कभी एक

Scanned with CamScanner

ही सभ्यता के दो केन्द्र थे।
पिगट महोदय ने इन्हें एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानियाँ कहा है। साहनी तथा बनर्जी के पश्चात् सर जॉन मार्शल तथा माधव स्वरूप वत्स ने क्रमशः मोहेनजोदड़ो एवं हड़प्पा में कई वर्षों तक उत्खनन करके महत्वपूर्ण सामग्रियाँ प्राप्त किया। इनके अतिरिक्त कुछ अन्य विद्वानों - के० एन० दीक्षित, अर्नेस्ट मैके, आरेल स्टीन, ए० घोष, जे० पी० जोशी आदि ने भी इस सभ्यता की खोज में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस पूरी सभ्यता को सिंधु घाटी की सभ्यता अथवा इसके मुख्य स्थल हड़प्पा के नाम पर हड़प्पा की सभ्यता कहा जाता है। कुछ विद्वानों का विचार है कि चूँकि इस सभ्यता का विस्तार सिंधु घाटी के बाहर बहुत बड़े क्षेत्र में था, अतः इसका

नामकरण सिंधु सभ्यता का
प्रथम स्थल के नाम पर हड़प्पा सभ्यता
कहना अधिक उपयुक्त होगा। इस सभ्यता
के प्रकाश में आने में भारतीय इतिहास की
प्राचीनता बढ़ जाती है और अब इस विश्वास
के लिये कारण है कि भारत देश भी मेसो
पोटामिया तथा मिस्र की सभ्यताओं के साथ
ही अपनी एक स्वतंत्र सभ्यता का विकास कर
रहा था जो उनकी समकालीन होते हुए भी
अनेक अर्थों से उनसे बढ़ कर थी
सैन्धव सभ्यता 2500 ई० पू० के आस-पास अपनी
पूर्ण विकसित अवस्था में प्रकट होती है। यह
केवल सिंधु नदी-घाटी की ही सीमित नहीं है।
पाकिस्तान के बलूचिस्तान, सिंध तथा पंजाब के
प्रान्तों में सैंधव सभ्यता के कई पुरास्थलों
की खोज की गयी है।

Scanned with CamScanner

FEBRUARY - 2020

S	M	T	W	T	F	S
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

दक्षिणी बलुचिस्तान सिंध तथा पंजाब के सुत्का गेनडोर, सोत्काकोह तथा बालाकोट प्रसिद्ध पुरास्थल है। सिंध प्रांत में मोहनजोदड़ो तथा चन्हुदड़ो के अतिरिक्त कोट दीजी, आमरी तथा जुडीरोदड़ो के पुरास्थल है। इसी प्रकार पंजाब में हड़प्पा के अतिरिक्त डेरा इस्माइल खान, रहमान ढेरी, सराय खोला, जलीलपुर के पुरास्थलो से सैंधव सभ्यता के प्राचीन अवशेष मिलते है। भारतीय उप-महाद्वीप के पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, जम्मु-कश्मीर तथा उत्तर प्रदेश प्रांतो से पुरातत्व विदो ने इस सभ्यता के बहुसंख्यक स्थलो को खोज निकाला है। पंजाब में रोपड़, कोटला निहड़ तथा संघोल। हरियाणा मे बनावली राखी गढी तथा मित्ताथल, राजस्थान मे कालीबंगन गुजरात में रंगपुर, लोथल, देसलपुर

16

M	T	W	T	F	S	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

तथा भोगत्रार, रोजदि सुर कोटड़ा, मालवण, महाराष्ट्र के अहमदनगर जिला में स्थित दैमाबाद, जम्मू-कश्मीर तथा उत्तरप्रदेश में चिनाब नदी के दाहिने किनारे पर स्थित माण्डा, उत्तर प्रदेश में आलमगीर पुर (मेरठ), बड़ागाँव और हुलास (सहारनपुर) आदि से सैंधव सभ्यता के अवशेष पाये गये है। हाल ही में चेन्नई के राष्ट्रीय समुद्र प्रौद्योगिकी संस्थान (NIOT) के समुद्र वैज्ञानिको ने गुजरात के तट पर से 30 किलोमीटर दूर खंभात की खाड़ी में समुद्री जल प्रदूषण के स्तर की जाँच के दौरान समुद्र में 40 मीटर नीचे दबे हुए एक विशाल नगर सभ्यता के अवशेष खोज निकाले है। इस नगर तथा सैंधव सभ्यता के स्थलों में अद्भुत समानता है।